ओ३म्
AUM

वेदाङ्ग
(KNOWLEDGE FROM THE VEDAS)

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी-प्रचार विभाग
Arya Pratinidhi Sabha Fiji
P.O. Box 4245, Samabula.

JULY-SEPTEMBER ISSUE 1997
NO. 14

संस्कार

(पिछले अंक से आगे)

सीमन्तोन्नयन संस्कार (तीसरा संस्कार)

मस्तिष्क तथा मानसिक शक्तियों को उन्नत करना सीमन्तोन्नयन संस्कार का मुख्य उद्देश्य है।

जब बच्चा गर्भ में चार महीने का हो जाता है तब उसकी मानसिक शक्ति का विकास आरम्भ हो जाता है तथा पांचवे महीने में मन शक्तियुक्त हो जाता है। छठे महीने में बुद्धि, जो की एक प्रकार की मानसिक शक्ति का अंग है, का विकास होने लगता है। सातवें महीने में शरीर के सब अंग बन जाते है और आठवें महीने में ओज (जो वीर्य की अन्तिम अवस्था का नाम है) मजबूत नहीं हो पाता, यह ओज नौवें महीने में मजबूत होता है। इसलिए चौथे, छठे और आठवें महीने में संस्कार करने से मन, बुद्धि तथा ओज की पवित्रता तथा मानसिक शक्तियों की उन्नति होती है।

गर्भवती स्त्री को विशेषकर इन महीनों में अपने मस्तिष्क से उचित कार्य करने की बहुत आवश्कता है क्योंकि जैसे चित्र आदि दृश्यों को देखा करेगी और जिन बातों का मन में चिन्तन करती रहेगी, उन सब गुणों का छाप बच्चे पर पड़ेगा। गर्भवती स्त्री जिस प्रकार की तस्वीर अपने मन में खींच लेती है उसी प्रकार की सन्तान को जन्म देती है, इसलिए उत्तम सन्तान के लिए स्त्री को ऐसे वातावरण में रहना चाहिए जिससे सन्तान उत्तम तथा शुद्ध संस्कारों की हो। गर्भवती को चाहिए की वह हमेशा अच्छी दृश्य देखे, कानों से अच्छी बात सुने, हाथों से उत्तम कर्म करे, मधुर तथा सत्य वाणी बोले अर्थात् अपना सब व्यवहार अच्छा रखना चाहिए जिस से सन्तान श्रेष्ठ हो।

याद रहे यह संस्कार यज्ञ द्वारा ही किया जाता है, जिसको करने की विधि स्वामी दयानन्द लिखित संस्कार विधि नामक ग्रन्थ से प्राप्त किया जा सकता है।

जातकर्म संस्कार (चौथा संस्कार)

गर्भाधान, पुन्सवन तथा सीमन्तोन्नयन संस्कार तब किये जाते है जब सन्तान माता के गर्भ में होती है। अब आगे हम जिस संस्कारों का वर्णन करेंगे वे तब किये जाते है जब सन्तान जन्म लेकर संसार में प्रवेश कर जाती है। पहले तीन संस्कारों को जन्म-पूर्व (जन्म से पहले) कहा जा सकता है, अगले संस्कारों को 'जन्मोत्तर' (जन्म के बाद) संस्कार कहा जा सकता है। जन्म से पहले माता तथा आनुवंशिक (hereditary) संस्कारों का मुख्य प्रभाव पड़ता है, तथा जन्म के बाद पर्यावरण-सम्बन्धी (environmental) संस्कारों का मुख्य प्रभाव पड़ता है। क्योंकि संस्कारों का उद्देश्य सन्तान को उत्तम बनाना है, इसलिये जन्म से पहले और जन्म के बाद दोनों दिशाओं को संस्कार-पद्धति से सुधारने का प्रयत्न किया जाता है।

सन्तान के उत्पन्न हो जाने के बाद जो कर्म किया जाता है, उसे जात-कर्म संस्कार कहते हैं। इसे संस्कार का नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि उत्पन्न होने के बाद किये जाने वाले 'कर्मों' के अतिरिक्त इसमें कुछ 'संस्कार' भी किये जाते है, जिनका उद्देश्य है कि सन्तान के अनजाने में भी उस पर कुछ संस्कार डालने का प्रयत्न किया जाता है।

बच्चे के उत्पन्न होने के बाद उसका मुँह, नाक, कान आदि साफ किया जाता है जिससे उसकी पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ (आँख, कान, जीभ, नाक तथा त्वचा -चमड़ा) ठीक से काम करने लगें। इसके अलावा माता-पिता को बच्चे पर उसके जन्म लेते ही कुछ ऐसे संस्कार डाल देने है जिनका उद्देश्य उसके जीवन की दिशा का निर्धारण कर देना है। यद्यपि यह ठीक है कि इस समय उस से जो कुछ कहा जायेगा उसे न तो वह समझ सकेगा, न उसका उसके जीवन पर कोई प्रभाव होता जान पड़ेगा। संस्कार सम्बन्धी इन क्रियाओं को करने का उद्देश्य सिर्फ यह है कि जब धीरे-धीरे वह बड़ा होगा, वह दूसरों का ऐसा ही संस्कार होते देखेगा, उसे बताया जायेगा कि उसका भी ऐसा ही संस्कार हुआ था, तब उसके उस दिशा में सोचने की सम्भावना बढ़ जायेगी।

सोने के शलाका (सीख जैसा पतला) द्वारा बच्चे की जीभ पर 'ओ३म्' लिखना

बच्चे को स्नान करा, शुद्ध वस्त्र से पोंछ, नया वस्त्र पहिना करके उस का पिता तथा पुरोहित हवन करें। अगर बच्चे का जन्म अस्पताल में हुआ हो तो जब वह अपने घर में आये तो उसी समय हवन करना चाहिए। ऐसा करने से

घर का वातावरण शुद्ध हो जाता है जो बच्चा तथा उसकी माता के लिऐ अति आवश्यक है। (हवन के मन्त्रों के लिए संस्कार विधि देखें -जातकर्म संस्कार)

हवन के बाद बच्चे का पिता सोने की शलाका को मिश्रित घी तथा शहद में लगाकर बच्चे के जीभ पर 'ओ३म्' लिखे। जब माता-पिता नव-जात शिशु की जीभ पर 'ओ३म्' लिखते है तब वे अपने ऊपर एक बड़ी भारी जिम्मेवारी लेते है। माता-पिता बालक को जिस स्थिति में रखेंगे बच्चे पर वैसे ही संस्कार पड़ेंगे। मनोविज्ञानिक कहते है कि बच्चा जन्म के पहले पांच वर्षों में जो-कुछ सीख जाता है वह उसकी जन्म भर की धरोहर होती है। पहले पांच वर्ष बच्चा माँ-बाप के द्वारा बनाया हुआ पर्यावरण में रहता है, तथा घर उसका पर्यावरण होता है। अगर माता-पिता साफ-सुथरा जीवन व्यतीत करेंगे, तो बच्चा वही सीखेगा, अगर वे नाच-तमाशों में, राग-रंग में घुले रहेंगे तो बच्चा भी उसी जीवन में रंग जायेगा। पिता जब बच्चे के जीभ पर 'ओ३म्' लिखता है तब वह अपने ऊपर यह जिम्मेवारी लेता है कि अपनी सन्तान को संसार की मोह-माया से अलग कर उसे अध्यात्म (पवित्र) मार्ग पर चलायेगा।

यह जिम्मेवारी तो पिता पर आती है, परन्तु इसी समय पिता बच्चे पर भी उसके अन्जाने एक जिम्मेवारी डाल देता है। बच्चा जब बड़ा होता है, और उसे पता चलता है कि उसके पिता ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह उसको सही रास्ता दिखायेगा, तब बच्चा भी दिनोंदिन अनुभव करने लगता है कि उसे अपने माता-पिता की आशाओं को पूरा करना होगा। इस दृष्टि से बच्चे के जीभ पर सोने की शलाका द्वारा 'ओ३म्' लिखना बच्चे के आध्यात्मिक -विकास के लिये अति आवश्यक है। संस्कार करने का उद्देश्य मानव-समाज को उच्च से उत्तम बना देना है।

बच्चे के कान में 'वेदोऽसि' कहना

बच्चे के जीभ पर 'ओ३म्' लिखने का अर्थ है कि उसके मुख से जो-कुछ बात निकलेगा वह उसे अध्यात्मिक ज्ञान की तरफ ले जाएगा, परन्तु उसके मुख से अध्यात्मिक ज्ञान की बात तभी तो निकलेगी जब उसके भीतर अध्यात्मिक ज्ञान भरा होगा। इसीलिए बच्चे के कान में पिता कहता है: वेदोऽसि - अर्थात् तू ज्ञानवाला प्राणी है, अज्ञानी नहीं है। कान में मन्त्र देने का अर्थ है - गुप्त बात, वह बात जो अपने भीतर सम्भाल कर रखने की होती है। पिता बच्चे के कान में उसके जन्म लेते ही यह बात कह देता है कि उसे संसार में ज्ञानी बनकर रहना होगा, अज्ञानी बनकर नहीं रहना होगा। गुप्त रूप में जो बात कही जाती है उसका स्पष्ट रूप में कह देने वाली बात से ज्यादा महत्व होता है। इसलिए जातकर्म संस्कार करना बहुत आवश्यक है।

बाकी अगले अंक में